P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-7* March- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

धौलपुर राज्य के सांस्कृतिक परिदृश्य में लोक गीत

Folk Songs in The Cultural Landscape of Dholpur State

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 23/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

धीरेन्द्र कुमार
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जयनारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

लोक संगीत का मूल आधार लोकगीत है। धौलपुर राज्य के परिप्रेक्ष्य में यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र या प्रसंग नहीं है जिससे सम्बन्धित लोकगीत यहाँ उपलब्ध नहीं हो। कोई भी कार्य ऐसा नहीं जिसका अभिव्यंजन लोकनाट्यो व गाथाओ में न हुआ हो।

लोकगीतो के भावो को लोकवाद्यो, लोकनृत्यो के जरिये पुष्ट किया जाता है। धौलपुर रियासत का लोकगीत यहाँ के निवासियो के रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, वेशभूषा, आस्था, पर्व–उत्सव आदि सभी कुछ में अभिव्यंजित होकर यहाँ की संस्कृति को साकार करते है। यहाँ के लोकगीतो पर ब्रज संस्कृति का प्रभाव विशेष रूप से देखने को मिलता है। जिसके फलस्वरूप राधा–कृष्ण के चरित्र पर आधारित अनेक गीत यहाँ की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में देखने को मिलते है।

The basic basis of folk music is folklore. It will not be an exaggeration to say in the perspective of the Dholpur State that there is no such area or context of life from which the folklore concerned is not available here. There is no work that has not been done in the expression of folk songs and gathas.

The sentiments of folk songs are confirmed through folk songs, folk dances. The folklore of the princely state of Dholpur expresses the culture of the residents by expressing their life, food, rituals, costumes, faith, festivals etc. in everything. The influence of Braj culture is particularly seen on the folk songs here. As a result, many songs based on the character of Radha-Krishna are seen in the cultural expression here.

मुख्य शब्द : संस्कृति, ब्रज, लोक कला, लोक संगीत, नृत्य, गायन, गीत, ढोलक, तबला, हारमोनियम।
Culture, Braj, Folk Art, Folk Music, Dance, Singing, Song, Dholak, Tabla, Harmonium.

प्रस्तावना

धौलपुर राज्य अपने सांस्कृतिक सामाजिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्धशाली रहा है। यहाँ की लोक संस्कृति की अपनी एक विशेषता है जिस पर ब्रज संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्र की अभिव्यक्ति की लोक कलाओ में स्थानीय गीतो का मौलिक स्वरूप परम्परागत रूप से वर्तमान में भी यथावत बना हुआ है जो इस क्षेत्र की एक नई पहचान को स्थापित करता है। यहाँ के स्थानीय लोकगीतो में नौटंकी, भेटगीत, ब्यावले, भटनी गीत, लाँगुरिया, ढोल, रसिया, मल्हार होरी, बारहमासी, कजरी आदि की प्रधानता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. लोक गीतो के कार्यक्रमो के माध्यम से क्षेत्र की एक नई सांस्कृतिक पहचान स्थापित करना।
2. वर्तमान में लोकगीतो का जन सामान्य के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव तथा सापेक्षित जन उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. समग्र रूप से लोकगीतो का उद्देश्य स्थानीय कलाकारो के सर्वधन एवं विकास को प्रोत्साहन देकर ग्रामीण क्षेत्र को आर्थिक दृष्टि से सशक्त करना तथा क्षेत्र की एक नई पहचान स्थापित कर पर्यटन की संभावनाओ को विकसित करना है।

साहित्यालोकन

धौलपुर राज्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रमाणिक ग्रन्थो व लेखो का सर्वथा अभाव रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर

एवं शाखा भरतपुर में उपलब्ध मूल स्त्रोतो, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध सामग्री तथा विभिन्न वर्षों में प्रकाशित धौलपुर प्रशासनिक रिपोर्ट्स का तथ्यपूर्वक अध्ययन कर उपयोग किया गया है।

उपलब्ध साहित्य में 2013 ई. में प्रकाशित डॉ. राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी की 'ब्रजलोक साहित्य और संस्कृति' जिसमे बृजक्षेत्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण लोक गीतो के पहलुओ का तार्किक ढंग से संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

उपलब्ध साहित्य में 2016 ई. में प्रकाशित किरण सिंघवी की 'केसरिया बालम' और 2019 ई. में इसी नाम से प्रकाशित राम सिंह, सूर्यकरण पारीक की 'केसरिया बालम' जिसमे राजस्थान के लोक गीत के पहलुओ का तार्किक ढंग से संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालय, हीरक जयन्ती समारोह स्मारकम् भाषा एवं पुस्तकालय विभाग राजस्थान एवं राजकीय सार्वजनिक जिला पुस्तकालय, धौलपुर द्वारा 2009 ई. मे प्रकाशित है। प्रस्तुत पत्रिका में धौलपुर राज्य के लांगुरिया, भेंटगीत, ब्यावले गीत इत्यादि लोकगीतो का उल्लेख किया गया है।

राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के प्रोसेडिंग्स वाल्यूम 33, फरवरी 2019 में धौलपुर राज्य के सांस्कृतिक परिदृश्य में लोक संगीत नामक शोध लेख प्रकाशित है जिसमें रियासतकालीन धौलपुर में लोक गीतों से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसके अलावा विभिन्न वर्षो में प्रकाशित प्रशासनिक वार्षिक रिपोर्ट्स एवं धौलपुर गजेटियर से भी हमें नौटंकी, ढोला, रसिया इत्यादि लोक गीतों की जानकारी मिलती है।

धौलपुर के सांस्कृतिक जन जीवन में लोक गीतो की भूमिका

धौलपुर राज्य की संस्कृति ब्रज के माथुर्य और राजस्थान के अक्खडपन के लिए मशहूर है। ब्रज प्रदेश के करीब होने के कारण ब्रज प्रदेश की सांस्कृतिक परम्पराओ का यहां काफी समावेश हुआ है। इसलिए यहां की लोक गायन में नौटंकी, भेंटगीत, ब्यावले गीत, भटनी गीत, लाँगुरिया, ढोला, रसिया, मल्हार, होरी, बारह मासी कजरी आदि की प्रधानता है।

नौटंकी

नौटंकी वस्तुतः एक प्रेम गायन है जिसके मूल में पंजाब की एक लोककथा है। जिसकी नायिका वहां के बादशाह की शहजादी नौटंकी तथा उसके साथ सहेली के रूप में जनाने परिवेश में रह रहे युवक की प्रेमकथा है। नौटंकी ख्याल गायकी में यद्यपि नक्कारो का प्रयोग प्रमुखता से होता है, किन्तु इसके साथ ही ढोलक, ढपली, सारंगी चिकारा आदि वाद्य भी बजाये जाते है।[1] धौलपुर रियासत में नौटंकी की भांति स्वांग का काफी प्रचलन रहा है। राज्य का शुक्ला परिवार तथा बसेड़ी के दुर्गाप्रसाद शर्मा की नौटंकिया काफी चर्चित रही है।

भेंट गीत (ख्याल गायकी)

राज्य में बाड़ी–बसेड़ी क्षेत्र भेंट गीतो (ख्याल गायकी) के लिए प्रसिद्ध है। इसके बड़े–बड़े दंगल आयोजित किए जाते है। दल के सभी सदस्य एक साथ बैठकर तथा आगे पीछे पंक्तिबद्ध चलकर गीतों की टेर लगाते है। नवरात्रि में भेंट गीतो की खास–तौर से धूम रहती है।[2]

''चली ग्वालन दूध बेचने को, सिर ऊपर धर कर गगरी''

ब्यावले गीत

ब्यावले गीत शिव चतुर्दशी के अवसर पर सारंगी तथा डमरू के साथ ब्यावले अर्थात् शिवजी के विवाह प्रसंग गाने की परम्परा मुख्यतः जोगियों में प्रचलित हैं। सीता और गंगा माता के ब्यावले भी गाये जाते है।

भटनी गीत

सर्पकाट के इलाज के लिए गाये जाने वाले भटनी गीत मुख्यतः कुशवाह जाति के लोगो में प्रचलित हैं। घड़े पर थाली रखकर ढप और नक्कारे के साथ गाये जाने वाले भटनी गीतो के द्वारा देवी–देवताओं का आव्हान किया जाता है।

लांगुरिया

कैला देवी एवं रेहना माता के मेले के अवसर पर राज्य भर में लाँगुरिया लोक गीतो की धूम रहती हैं। लाँगुरिया लोक गीतो का प्रधान विषय वस्तु शिव और शक्ति की महिमा का गायन हैं। माता के मेलो में जिन्हें यहां की स्थानीय बोली में माता की जात कहा जाता हैं। लाँगुरिया गीत बहुत गाये जाते हैं।[3]

''दो–दो जोगनी के बीच अकेलो लांगुरिया,
एक जोगिनी यो कहे तू जुडला ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो कहे, तू नथ गढ़वा दे मोय,
कैसे आयो महल जनाने में, बता दे लांगुर मोय।''
''चक्की चल रही बर के नीचे, रस पीजा लांगुरिया
दैवी मैय्या के भवन में, घुटवन खेले लांगुरिया।''

ढ़ोला

खरीफ की फसल होने पर गांव की चौपालो पर ढ़ोला की बहार होती हैं। आल्हा व ढ़ोला का चलन हैं। सारंगी तथा ढ़ोलक के माध्यम से परामपरागत एवं पौराणिक कथाये गायी जाती हैं। जैसे नल–दमयन्ती की कथा, नरसी भगत का भात, शिव–पार्वती विवाह आदि। तीर्थराज मचकुण्ड पर भादो की देवछट के अवसर पर रात भर ढ़ोला गायको की प्रतियोगिताएँ होती है जिनमें इनाम बतौर साफे तथा रूपया रखे जाते हैं।

गम्मत

गम्मत में सारंगी, तबला व हारमोनियम का प्रयोग होता हैं। धौलपुर में दीनदयाल तथा सैपऊ में देवचरन नामक गम्मत गायको में चर्चित रहा हैं।[4]

होली

फागुन मास में होली के अवसर पर होली गीत गाये जाते है।

''कहूं बात आज की आली, मैं थोरी–थोरी,
सुनियों की कान दे कान्हा की बर जोरी।''

रसिया

फागुन मास में रसिया का प्रचलन है [5]

''हर ने दीनी कमर झुकाय ट्रेक्टर ले लो लांगुरिया
कैसे काटू सखी जवानी मेरो बालम वारो री।''

मल्हार

सावन का मनभाावन महीना यू तो हर ओर अपना सौन्दर्य लुटाता फिरता है लेकिन ब्रजधरा पर

उतरते ही मानो यह नवयौवन पा जाता है। राधा–कृष्ण के अलौकिक प्रेम में पगी ब्रजधरा इस अलवेले मास का साहचर्य पाकर इठला उठती है। उमंगित, तरंगित ब्रज वनिताओं का यही आह्लाद उनके कंठो से मल्हार बनकर फूट पड़ता है। लोकगायन की माधुर्यपूर्ण शैली 'मल्हार' ब्रज अंचल में सावन का पर्याय बन चुकी है।

प्रकृति नटी की नाना अठखेलियां हो या मन मयूर का मनमोहक नृत्य, ये सभी पक्ष मल्हारों की वेणी में गुंथ कर सावन को अनूठा श्रृंगार प्रदान करते है। लोकगायन की यह सरस सुधा सदियों से कंठो में उमड़ी ओर फलती–फूलती रही है। यही ब्रज की रज में माधुर्य भरती रही है। कोई भी श्रावणी पर्व–उत्सव मल्हारों के बिना मनाना संभव नहीं होता है।[6] मल्हार सावन का चित्र उकेरती पक्तियां निम्न है–

''सावन आयो अजब सुहावने जी
ए जी कोई गावत मधुर मल्हार.....
सखियन बागन में झूला झूलती जी,
ए जी कोई बरसत मेघ अपार.....
छाई है कैसी बहार आई रे रितु सावन की
अमरा की डारन पर बोलत कोयलिया.....''

धौलपुर संगीत व गायन को लोकप्रिय बनाने का श्रेय जाता हैं, स्वर्गीय मास्टर बब्बू खां को जिन्होने धौलपुर में संगीत कला मंदिर की स्थापना की।[7] तथा उसके माध्यम से बच्चों को नृत्य, वादन तथा गायन की शिक्षा के साथ–साथ धौलपुर में और भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा नाटकों की प्रस्तुति की। संगीत कला मंदिर के अनेक विद्यार्थियां ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में शीर्ष स्थान प्राप्त किया हैं।

महमूद धौलपुरी, धौलपुर के गौरव है जो भारत के प्रसिद्ध हारमोनियम वादको में से एक हैं। आपके कार्यक्रम रेडियो व टेलीविजन पर आते रहते हैं तथा आप देश में प्रसिद्ध कलाकारों परवीन सुल्ताना, उस्ताद अहमद खां, पं. जसराज, मंगूबाई हंगल, गुलाम मुस्तफा खां, शफरत खां आदि के साथ संगत कर चुके हैं। आपको धौलपुर गजट की ओर से सांस्कृतिक एवं कला क्षेत्र में 1985 ई. का विशिष्ट नागरिक घोषित किया गया एवं उनका सम्मान किया गया।

धौलपुर के पं. विष्णुदत्त शर्मा धौलपुर के प्रसिद्ध गायक वादक तथा कत्थक नर्तक हैं। हारमोनियम पर आपको विशेष महारथ हासिल हैं। आप इस समय धौलपुर के सबसे वयोवृद्ध संगीतज्ञ हैं।[8]

श्री कोमल सिंह धौलपुर के प्रसिद्ध ठुमरी गायक हैं। आपको राजस्थान के ब्रजभाषा एकेडमी द्वारा सम्मानित किया जा चुका हैं। श्री नारायण सिंह बैगनिया धौलपुर के प्रसिद्ध लोक नर्तक हैं।[9] श्री बैगनिया का कद केवल 32 इंच हैं तथा शारीरिक रूप से कुछ अपंग भी है। परन्तु इन सब कठिनाईयों के बावजूद अपनी साधना व लगन से आज अच्छे कलाकारों की श्रेणी में आते हैं। आपके पास लोकगीतो व लोक नृत्यों का भण्डार हैं। आपका नाम राजस्थान पर्यटन विभाग की कलाकारों की सूची में अंकित हैं।[10] आप दिल्ली में आयोजित ''अपना उत्सव'' कार्यक्रम में धौलपुर के लोक कलाकारों के साथ इस सम्मान का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

इस प्रकार धौलपुर राज्य के सांस्कृतिक परिदृश्य में लोकगीतों की विशिष्ट भूमिका रही हैं जो वर्तमान में यहां की कला और संस्कृति के जीवन्त उदाहरण हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *व्यास, डॉ. राजेश कुमार–सांस्कृतिक पर्यटन राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, जयपुर, 2011,पृ. 101*
2. *धौलपुर जिला दर्शन, नवम्बर 2000 ई. यादराम सिंह यादव पृ.78*
3. *राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालय, हीरक जयन्ती समारोह स्मारम् 2009 ई. पृ. 10*
4. *राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स धौलपुर 2005 ई. पृ. 86*
5. *चतुर्वेदी, डॉ. राजेश्वर प्रसाद– बृजलोक साहित्य और संस्कृति, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2013 ई., पृ. 152*
6. *राठौर, डॉ. अमरसिंह–राजस्थान सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर, 2010–11 ई. पृ. 391*
7. *धौलपुर गजट (साप्ताहिक) 1989 महेश कुमार भार्गव पृ. 56*
8. *धौलपुर इतिहास की पूरक पठनीप सामग्री अरविन्द शर्मा पृ. 37*
9. *जिलेवार सांस्कृतिक सर्वेक्षण, धौलपुर पृ. 80*
10. *धौलपुर चित्रण साप्ताहिक, रजत जयन्ती स्मारिका 2014 ई. पृ. 50*